IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 1, February 2026

Impact Factor: 8.2

—fÙkokl jkek;.k e¡ Hkxoku Jhjke

vfHkftr ljdkj

शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग,

बी. जी. आर. परिसर पौड़ी

हेमवती नन्दन बहुगुणा, गढ़वाल विश्वविद्यालय,

श्रीनगर गढ़वाल, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड

sarkarabhijit416@gmail.com

lkjka'k&

पन्द्रहवीं शताब्दी के बङ्गाली कवि कृत्तिवास ओझा द्वारा बङ्गाली भाषा में रचित रामायण को **—fÙkokl jkek;.k** या **Jhjke ik¥pkyh** के नाम से जाना जाता है। कृत्तिवास रामायण की मुख्य विशेषता यह है कि इसकी रचना **i;kj NUnk** में गीत स्वरूप की गई है और यह मूल संस्कृत रामायण का शाब्दिक अनुवाद नहीं है। कवि कृत्तिवास ने इस रचना में अनेक–रामायणों में उपलब्ध कथावस्तु को स्थान दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने बङ्गाली सामाजिक रीति–रिवाजों और सामाजिक जीवन के तत्त्वों को प्रस्तुत करके रामायण की कहानी को बङ्गाली संस्कृति से युक्त कर दिया, जो मूल वाल्मीकि रामायण से कई विषयों में पृथक् हैं। महर्षि वाल्मीकि के मूल रामायण में रामचन्द्र के द्वारा की गई दुर्गा पूजा का उल्लेख नहीं है, और न ही यह किसी अन्य रामायण में दिखाई देता है। लेकिन कवि कृत्तिवास ओझा ने अपनी रामायण में उल्लेख किया है। वह तत्कालीन बङ्गाली समाज के आलोक में रामायण के चरित्रों की भी व्याख्या करते हैं, जो वाल्मीकि रामायण में वर्णित कुछ पात्रों के चरित्र-चित्रण से भिन्न है। श्रीराम का चरित्र भी उन में से एक है।

l³dsr 'kCn– कृत्तिवास रामायण, रामायण, भगवान् श्रीराम।

—fÙkokl jkek;.k के कवि कृत्तिवास ओझा मध्यकालीन बङ्गाली साहित्य के एक प्रमुख कवि थे। उनका जन्म 1381 ईस्वी में पश्चिम बङ्गाल के नदिया जिले के फुलिया गाँव में हुआ था।[i] वे ब्राह्मण वंश में जन्मे थे। बारह वर्ष की आयु में कृत्तिवास गुरुगृह में अध्ययन करने के लिए गंगा नदी को पार करके उत्तरबङ्ग में चले गए। अपनी शिक्षा के बाद पाण्डित्य प्रदर्शन करने के लिए गौड़ेश्वर गणेशनारायण भादुड़ी के राजसभा में उपस्थित हुए और राजा को एक सुरीले छंद में श्लोक सुना कर प्रसन्न कर दिया। उसके पश्चात् राजाश्रय में रहने लगे। राजा के आदेश पर, कृत्तिवास ने अपनी **—fÙkokl jkek;.k** या **Jhjke ik¥pkyh** लिखी।[ii]

कृत्तिवास रामायण की मुख्य विशेषता यह है कि इसकी रचना **i;kj NUnk** में गीत स्वरूप की गई है और यह मूल संस्कृत रामायण का शाब्दिक अनुवाद नहीं है। सदियों से इस रामायण में विभिन्न प्रकार के संशोधन और विस्तार हुए हैं। 1802 में कृत्तिवास रामायण पहली बार विलियम कैरी के प्रयासों से श्रीरामपुर मिशन प्रेस से पाँच खण्डों में प्रकाशित हुआ। फिर 1830–34 में इसका दूसरा संस्करण जयगोपाल तर्कालङ्कार के संपादन में दो भागों में प्रकाशित हुआ। वर्तमान में, कृत्तिवास

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, February 2026
Impact Factor: 8.2

रामायण की कुल 2,221 पाण्डुलिपियाँ पश्चिम बङ्गाल और बाङ्लादेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में संरक्षित हैं।[iii] आज के समय में उपलब्ध कृत्तिवास रामायण सात काण्डों में विभाजित है। यथा –

1. बालकाण्ड
2. अयोध्या काण्ड
3. अरण्य काण्ड
4. किष्किन्धा काण्ड
5. सुन्दर काण्ड
6. लङ्का काण्ड
7. उत्तर काण्ड

–fÙkokl jkek;.k मूल वाल्मीकि रामायण से कई विषयों में पृथक् हैं। कृत्तिवास रामायण में निम्नलिखित कथावस्तु अतिरिक्त रूप में प्राप्त होती है–

- बीरबाहु का युद्ध।
- तारणीसेना की कहानी ।
- महिरावण–अहिरावण की कहानी ।
- राम का अकालबोधन।
- मरते हुए रावण को रामचन्द्र की शिक्षा ।
- सीता ने रावण का चित्र बनाया और राम का सीता पर सन्देह ।
- लव-कुश की लड़ाई ।

कवि कृत्तिवास ने बङ्गाली सामाजिक रीति–रिवाजों और सामाजिक जीवन के तत्त्वों को प्रस्तुत करके रामायण की कहानी को बङ्गाली संस्कृति से युक्त कर दिया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के भाषा में कहा जा सकता है कि इस काव्य में ''प्राचीन बङ्गाली समाज अपने आपको अभिव्यक्त करता है''। कवि कृत्तिवास ने कृत्तिवास रामायण में जिन चरित्रों की व्याख्या की है **Jhjke** उन में से श्रेष्ठ चरित्र हैं।

कवि कृत्तिवास ओझा ने अपने इस रामायण में श्रीरामचन्द्र को भगवान् के रूप में दर्शाया है। भगवान् पद भगवत् शब्द का प्रथमाविभक्ति का एक वचनरूप है, जो शब्द भग के साथ मतुप् प्रत्यय करके निष्पन्न हुआ। भगवान् पद का अर्थ है– भग अस्य अस्मिन् वा अस्तीति स भगवान् अर्थात् जिसमें भग तत्त्व विद्यमान् है या जो भग वाला है वह भगवान् है। भग पद का शाब्दिक अर्थ है– ऐश्वर्य्य, वीर्य्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य। अर्थात् जो ऐश्वर्यादि छः गुणयुक्त है वह भगवान् है। इस विषय में विष्णुपुराण में कहा है–

,Üo¸;L; lexL; oh¸;L; ;'kl% fJ;%A
Kkuojk X;;k'po "k..kk Hkx brh³xukAA
mRifÙk çy;¥po Hkrkukekxfr xfre A
ofÙk fo|kefo|k¥p l okP;k HkxokfufrAA
Kku'kfäcyÜo¸;oh¸;rtkL;'k"kr%A

DOI: 10.48175/IJARSCT-31176

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, February 2026
Impact Factor: 8.2

HkxoPNCnokP;kfu fouk g;xi.kkfnfHk%AA[iv]

इस विषय में महाभारत में कहा है–

fuonu% l[kktkr% lxUèkkjk egkèku%A

xUèkikyh p Hkxoku mRFkku% lOodEel.kkeAA[v]

अमरकोष में भगवान् का पर्यायवाचीशब्द है– सर्वज्ञ, सुगत, धर्मराज, तथागत, समन्तभद्र, भगवत्, मारजित्, लोकजित्, जिन, षडभिज्ञ, दशबल, अद्वयवादिन्, विनायक, मुनीन्द्र, श्रीघन, शास्त्री और मुनि।[अप]

रमते इति रामः। रम् क्रीडायाम् इस अर्थ में रम् धातु के साथ ''**TofyfrdlUrH;k .k%**''[vii] सूत्र से ण प्रत्यय करके राम शब्द निष्पन्न होता है। ''**jke**'' शब्द का अर्थ हैः वह जिसके साथ योगी रमण (ध्यान) का आनंद लेते हैं, परब्रह्म या विष्णु। अमरकोश में राम शब्द का पर्यायवाची शब्द है– बलभद्र, प्रलम्बघ्नो बलदेव, अच्युताग्रज, रेवतीरमण, राम, कामपाल, हलायुध, नीलाम्बर और रौहिणेय।[अपपप] शास्त्रों में तीन रामों का उल्लेख मिलता हैं– राम, परशुराम और बलराम।[पग] यहाँ पर आलोच्य दशरथ के पुत्र श्रीराम है। श्रीरामचन्द्र भगवान् विष्णु के अवतार हैं। इस विषय में कहा है–

n'kjFk ;K dj pkg i=ojA

jko.k ekfjr fo".k tfUeou rkj ?kjAA[x]

अर्थात् रावण को मारने के लिए भगवान् विष्णु राजा दशरथ के घर में श्री राम जन्म ग्रहण करें।
राम का जन्म सूर्यवंश, इक्ष्वाकुवंश में हुआ था, जो बाद में उस राजवंश के राजा रघु के बाद रघुवंश के रूप में जाना जाता है। इस विषय में रामायण में कहा है–

n'kjFk uke jktk tUe l¸;o'kA

;kgkr gbo jkej tUe vucUèkAA[गप]

श्रीरामचन्द्र अयोध्या के राजा दशरथ और उनकी मुख्य पत्नी कौशल्या के सबसे बड़े पुत्र थे। हिन्दू राम को ''पुरुषोत्तम'', ''सबसे महान व्यक्ति'' या ''आत्म–नियंत्रण के भगवान्'' के रूप में सन्दर्भित करते हैं। वे सीता के पति हैं। राम की एक विशेष चित्र में उन्हें उनके भाई लक्ष्मण, पत्नी सीता और भक्त हनुमान के साथ दिखाया गया है। इस मूर्ति को ''राम परिवार'' कहा जाता है। इस ''राम परिवार'' की हिन्दू मन्दिरों में पूजा की जाती है। चैत्रमास शुक्लपक्ष की नवमी तिथि को भगवान् रामचन्द्र का जन्मोत्सव मनाया जाता है। लोककथाओं के अनुसार, राम की जन्मभूमि अयोध्या नगरी है, जहाँ पर ''रामलला'' या शिशु राम की पूजा होती है। राम–सम्बन्धी उपाख्यानों का मुख्य स्रोत महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखित भारतीय महाकाव्य रामायण है।

राम की जीवन गाथा को हिन्दू धर्मपरायणता के आदर्श के रूप में मानते हैं। उन्हें आदर्श पुरुष माना जाता है। अपने पिता के वचनपालन के लिए, उन्होंने सिंहासन त्याग दिया और चौदह वर्ष के लिए वन में चले गए। वनवास के दौरान, लंका के राजा रावण ने सीता का अपहरण कर लिया और उन्हें स्वर्ण लंका ले गए। एक लम्बी खोज के बाद, राम को हनुमान् के माध्यम से पता चला कि सीता स्वर्णलंका (अब श्रीलंका) में थी। तब वानरसेना सहित स्वर्ण लंका में जाने के लिए सेतु का निर्माण किया। रावण की विशाल राक्षस सेना से युद्ध किया। इस युद्ध में रावण की पराजय हुई। राम सीता के साथ पुनः अयोध्या लौट आए। वहां उनका राज्याभिषेक हुआ। बाद में वे सम्राट् बन गए। राम और लक्ष्मण के सौहार्द, कौशल्या के शोकसन्ताप और सीता के

गृहिणी के रूप में लज्जावनत–माधुरी कृत्तिवास रामायण में सुन्दर रूप से व्यक्त किया गया है।[xii] हिन्दू समाज सीता को लक्ष्मी का अवतार मानते हैं। हिन्दूओं की दृष्टि में वह स्त्रियों का आदर्श है।

श्रीरामचन्द्र हिन्दू धर्म के वैष्णव सम्प्रदाय और वैष्णव शास्त्रों में पाए जाने वाले लोकप्रिय देवताओं में से एक हैं। राम की कहानी भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया में विशेष रूप से लोकप्रिय है।[गपपप] हिंदू धर्म में राम अनन्त प्रेम, साहस, शक्ति, भक्ति, कर्त्तव्य और मूल्यों के देवता हैं। उनके राज्य में प्रजा शान्ति और समृद्धि से रहती थी और न्यायपूर्ण का शासन चलता था। इसलिए राम के शासन के बाद जिस राज्य में भी शान्ति, समृद्धि, न्याय का शासन होता है उस राज्य को ''jke jkT;'' के रूप में जाना जाता है।

कवि कृत्तिवास ने रामायण में राम का जो चित्र दिखाया है उसका प्रभाव बङ्गाल के समाजजीवन में दिखाई देता है। हावड़ा जिले के रामराजतला में श्रीराम और सीता की बङ्गाल के विभिन्न स्थानों में बहुत पहले से पूजा की जाती रही है। पश्चिम बङ्गाल के कटोवा में राम की लगभग बीस मूर्तियाँ हैं।[गपअ] इसके अलावा बांकुड़ा जिले में भी राम मन्दिर मिलता है। उन्हें बङ्गाल में रघुनाथ शिला के रूप में भी पूजा की जाता है। बङ्गाल में कई राम मूर्तियों में राम की मूंछें देखी जाती हैं। बङ्गाल में राम के कई सिक्के मिले हैं। बङ्गाल में गौड़ीय वैष्णववाद लोकप्रिय होने से पहले, कई लोगों को राम मंत्र में दीक्षित किया गया था। बाँकुड़ा जिले में कई राम मन्दिर बनाए गए थे। विष्णुपुर में दुर्गा पूजा ''रावणकटा नृत्य''[गअ] के साथ समाप्त होती है।

मूल वाल्मीकि रामायण में, श्रीरामचन्द्र भगवान नहीं हैं – वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, मानव शक्ति के अवतार। परन्तु कृत्तिवासी रामायण में रामचन्द्र सबके आराध्य अवतार हैं, तुलसीचन्दन में लीन देवविग्रह। वे सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता है, बांसुरीधारी कृष्ण की तरह उनका नयन प्रेमाश्रुपूर्ण हैं। इस काव्य में, राम और रावण के भयंकर युद्धक्षेत्र को देखकर गैरिक रंग से रञ्जित हरिनाम संकीर्तनभूमि जैसा भ्रम होता है और युद्ध के ध्वनि कभी कभी वैष्णव मृदङ्ग–झांझ की कोमल लय की भाँति प्रतीत होती हैं।

वास्तव में, बङ्गाल की शाक्त और वैष्णव परम्पराओं के बीच द्वन्द्व अद्वितीय रूप से कृत्तिवासी रामायण में प्रकट हुआ है। कृत्तिवासी रामायण में बिभीषण की भाँति अन्य राक्षस जैसे तरणीसेन, बीरबाहु भी वैष्णव भक्त के रूप में श्रीरामचन्द्र का स्तुतिगान करते हैं। दूसरी ओर विजय के लिए श्रीरामचन्द्र 'अकाल–बोधन' चण्डी पूजा करते हैं जो 'kkä पूजापद्धति है। अकालबोधन चण्डीपूजा में एक सौ आठ कमल पुष्पों की आवश्यकता होती है, पूजा के समय श्रीराम की परीक्षा लेने के लिए देवी द्वारा एक पुष्प छिपा दिया जाता है तो रामचन्द्र एक पुष्प के स्थान पर अपने नेत्र अर्पण कर पूजा समाप्त करते है। इस विषय में कहा है–

foHkh"k.k du jke] fd gbo vkjA vkek&çfr n;k cf> uk gy nxkjAA
o¥puk dfjyk noh] cf> vfHkçk;A lhrkj m)kj vkj ukfgd mik;AA
u;u cfgN èkkjk] l'kkd vUrjA dkUnu d#.kke; çHk ijkRijAA
dkrj gb;k ro du foHkh"k.kA ,d de dj çHk] fuLrkj&dkj.kAA
rf"kr p.Mhj ,b djg fcèkkuA v"VkÙkj 'kr uhykRiy dj nkuAA
noj nyHk i"i ;Fkk rFkk ukbA r"Vk gou Hkxorh] 'kug xklkbAA
'kfu;k rkgkj ckD; j?kukFk duA dkFkk iko uhyine] vkfuo ,[kuAA
noj nyHk tkgk] dkFkk iko ujA ldfy vkekj HkkX; foèkku n"djAA
dkrj nf[k;k jke gueku d;A fLFkj gvk] fpUrk nj dj egk'k;AA

DOI: 10.48175/IJARSCT-31176

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, February 2026
Impact Factor: 8.2

nkl vkN] dlu çHk] fpUrk dj euA Fkkd ;fn uhyine] vkfuc ,{k.kAA
Lox eÙrk ikrky Hkfe;k Hke.MyA ,b n.M vkfu fno 'kr uhykRiyAA
fcHkh"k.k cy] ohj&gueku&dkNA vouhr nchng uhyine vkNAA
n'k&oRlj iFk gbo fu'p;A chj dg] vkfu fno] ukfgd l'k;AA
jkepUæ ç.kfe;k ohj guekuA nchng&mí'kr dfjy i;kuAA[गाअप]

युद्धक्षेत्र में राक्षसराज रावण तथा वीरबाहु का एक वैष्णव दास के रूप में चित्रण है। वे श्रीराम के समक्ष दास भाव से कहते है कि हमें हमारे अपराध के लिए क्षमा कर दीजिए। युद्धक्षेत्र में जब गिरे हुए दैत्य वीरबाहु के प्रतिद्वंद्वी के प्रति विनम्र निवेदन ^vfd¥pu n;k dj jke j?koj^^[xvii] अर्थात् हे राम रघुवर मुझ पर कृपा करो, और राक्षसराज दशानन रावण का निवेदन–

cã vfXu ok.kj e[k >kd >kd mBA rkgk nf[k jko.k jktk dg djiVAA
od.Bj ukFk rfe no vorkjA vkfe lod xklkf¥ n;kfj rkekjAA
ludkfnj 'kki vkfe gbyke njkpkjA lod ekfjr pkg ,dku fopkjAA
y{k.kh Bkdjh.kh lhrk rkgk vkfe tkfuA lhrk vkfu fno çk.k jk[k pØikf.kAA
lf"V fLFkfr çy; lHk rkekj dkj.kA rkekj ek;k; dkFkk fLFkj ug dku tuAA
l0ox.ke; rfe cã ijdk'kA cãk bUæ #æ rfe LFkkoj vkdk'kAA[xviii]

^vijk/k ektuk djg n;ke;^^[xix] अर्थात् हे दयामय, मेरे पापों को क्षमा कर। विभीषण का पुत्र तरणीसेन वैष्णव भक्त के समान अपने शरीर में राम नाम अङ्किकत कराकर युद्धक्षेत्र में आता है। तरणीसेन को प्रतिद्वन्द्वी योद्धा भगवान् रामचन्द्र अपने विश्वरूप का दर्शन कराते है। ऐसा माना जाता है कि रामायण में ये परिवर्तन उस समय के बङ्गाली सामाजिक जीवन (वैष्णव–नीति) की प्रकृति के अनुसार हुए थे। इस विषय में रामायण में कहा है–

Jhjke cyu] 'ku fe= foHkh"k.kA nf[k nf[k lxke vkby dku tuAA
foHkh"k.k cy] 'ku jktho ykpuA jko.kj vUur ikfyr ,dtuAA
lEcEèkr Hkkr"i=] ifjp; KkfrA èkEer èkkfed i=] cM ;k)ifrAA
çdkjr fnyu ç—r ifjp;A rj.kh Hkkfo'N] dkFkk jke&n;ke;AA
dVd&dVd ;) gby foLrjA Hkx fn;k iykby ;rd okujAA
pkfjfnd ugkfj;k nf[kN rj.khA dr{k.k n[kk ikb jke j?kef.kAA
dr{k.k firkj ikbc nj'kuA tue lQy go] tMkbc thouAA
eu Hkko] dr ij no&ukjk;.kA pkykb;k fny jFk Rofjr&xeuAA
j?kukFk&iku ;fn pkykby jFkA èk;; fx;k uhyohj vkxfyy iFkAA
uhyohj cy] cVk vkj tkfc dkFkkA ,dpM jk{klk] fNfMc rkj ekFkkAA
tkMgkr cy] foHkh"k.kj uUnuA iFk NkM] nf[k fx;k Jhjke&y{e.kAA
uhy cy] çk.k yc iorr&pkiuA deu nf[kfo cVk] Jhjke&y{e.kAA
v³x y[kk jke&uke jFk&pkfjik'kA rj.khj Hkfä nf[k dfix.k gklAA
n"V fu'kkpj&tkfr dr ek;k tkuA gb;k èkkfEed od vkfl;kN j.kAA[xx]

DOI: 10.48175/IJARSCT-31176

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

लेकिन मूल वाल्मीकि रामायण की प्रतिध्वनि भी इस काव्य के विभिन्न अंशों में अधिकांश सुनाई देती है, जैसे–

I0o I y{k.k ;kj g; vfèk"BkuA fgIkj b"kr ukb pUæ I;j IekuAA

bUæ ;e ok; o#.k ;b cyokuA f=Hkou ukb dg rkgkj IekuAA [xix]

अर्थात्

सभी अच्छे समय वे हैं जिनके पास अधिष्ठान है।

द्वेष नहीं है, चन्द्रमा सूर्य के समान है।

इन्द्र यम वायु वरुण जो बलवान है।

ब्रह्मांड में उनके बराबर कोई नहीं है।

उपर्युक्त समालोचना से यह कहा जा सकता है कि– कृत्तिवास रामायण में श्री राम को बाङ्गाली संयुक्त परिवार का एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में दिखाया गया है। राम एक आदर्श चरित्र हैं, जिनका नाम लोगों के मन में शाश्वत प्रेम, भक्ति, साहस, पराक्रम, कर्तव्य की भावना और मूल्यबोध का अनुभव कराता है। इस काव्य में कवि ने श्रीरामचन्द्र को किसी के लिए आदर्श पुत्र, किसी के लिए आदर्श पति, किसी के लिए आदर्श स्वामी, किसी के लिए आदर्श पिता, किसी के लिए आदर्श राजा और किसी के लिए आदर्श नायक के रूप में चित्रित किया है।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि श्रीराम कोई चित्र नहीं हैं, श्रीराम एक आदर्श चरित्र हैं, एक आदर्श व्यक्तित्व हैं। श्रीराम व्यक्ति मात्र नहीं, श्रीराम सम्पूर्ण विश्व की अभिव्यक्ति हैं। इसलिए श्रीराम की न केवल एक चित्र के रूप में बल्कि एक चरित्र या आदर्श के रूप में पूजा करनी चाहिए।

IUnHk Iph

[i] The Literature of Bengal, Dutta Romesh Chunder, Thacker Spink & Co. Calcutta, 1895, p.- 48 ।

[ii] बाङ्ला साहित्येर इतिहास, सुकुमार सेन, आनन्द पबलिशर्स, कलकाता, 1991, पृष्ठासंख्या105–110, ISBN–81–7066–966–9 I

[iii] Krittibas Memorial Issue, Gazette of the Information and Cultural Affairs Department, Government of West Bengal, Paschimbanga, February 2006, p.82 ।

[iv] विष्णुपुराण 6/5/74–76

[v] महाभारत 13/17/127

[vi] अमरकोश 1/1/23/2/2

[vii] अष्टाध्यायी 3/1/146

[viii] अमरकोश 1/1/13/2/2

[ix] रामायणः खोला चोखे, हरप्रसाद मुखोपाध्याय, विंश शताब्दी पब्लिशर्स, कलकाता, 2000, पृष्ठसंख्या 17।

[x] कृत्तिवास रामायण/ आदि काण्ड, कृत्तिवास ओझा, सम्पादक– गोपीमोहन सिंह राय, क्यालकाटा प्रिन्टिं हाउस, कलकाता, 1956, पृष्ठायंख्या 10 ।

[xi] कृत्तिवास रामायण/ आदि काण्ड, कृत्तिवास ओझा, सम्पादक– गोपीमोहन सिंह राय, क्यालकाटा प्रिन्टिं हाउस,कलकाता, 1956, पृष्ठायंख्या 1 ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, February 2026
Impact Factor: 8.2

xii दीनेशचन्द्र सेन, बङ्गभाषा ओ साहित्य, प्रथम खण्ड, पश्चिमबङ्ग राज्य पुस्तक पर्षद्, कलकाता–13, प्रकाश, 1986, पृष्ठासंख्या 134–139 ।

xiii Dimock Jr, E.C. (1963)। "Doctrine and Practice among the Vaisnavas of Bengal"। *History of Religions*। **3** (1): 106–127, jestore 1062079। DOI :10.1086/462474।

xiv बङ्गसंस्कृति में श्रीरामचन्द्र, श्री कुशल वरण चक्रवर्ती, वैदिक सनातन हिन्दुत्ववाद, 8 july 2023।

xv वांग्ला दशेरा–रावन काटा, अनिर्वान साहा, 2017 / 06 / 16।

xvi कृत्तिवास रामायण/ लङ्काकाण्ड, सम्पादक– नन्दकुमार अवस्ती, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ, 2000, पृष्ठसंख्या 391।

गअपप कृत्तिवास रामायण/ लङ्काकाण्ड, कृत्तिवास ओझा, सम्पादक– गोपीमोहन सिंह राय, क्यालकाटा प्रिन्टिं हाउस,कलकाता, 1956, पृष्ठायंख्या, 286।

xviii कृत्तिवास रामायण/ लङ्काकाण्ड, कृत्तिवास ओझा, सम्पादक– गोपीमोहन सिंह राय, क्यालकाटा प्रिन्टिं हाउस,कलकाता, 1956, पृष्ठायंख्या, 292।

xix कृत्तिवास रामायण/ लङ्काकाण्ड, कृत्तिवास ओझा, सम्पादक– गोपीमोहन सिंह राय, क्यालकाटा प्रिन्टिं हाउस,कलकाता, 1956, पृष्ठायंख्या, 292।

xx कृत्तिवास रामायण/ लङ्काकाण्ड, सम्पादक– नन्दकुमार अवस्ती, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ, 2000, पृष्ठसंख्या 228।

xxi कृत्तिवास रामायण/ आदिकाण्ड, कृत्तिवास ओझा, सम्पादक– गोपीमोहन सिंह राय, क्यालकाटा प्रिन्टिं हाउस,कलकाता, 1956, पृष्ठायंख्या 1।

lUnHkZ xzUFk lwph

1. कृत्तिवास रामायण, अवस्ती नन्दकुमार, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ, 1973 सन्।
2. कृत्तिवास रामायण, चौधुरी विश्वनाथ, तरुण प्रिन्टर्स, कलकाता, 1940 सन्।
3. रामायण मञ्जरी, आचार्य क्षेमेन्द्र/ शास्त्री प. भवदत्त, तुकाराम जावजी, 1903 सन्।
4. चम्पू रामायण, मिश्र आचार्य श्रीरामचन्द्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1979 सन्।
5. श्रीरामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास/ पोद्दार श्रीहनुमानप्रसाद, गीताप्रेस, गोरक्षपुर, 2018 सन्।
6. महाभारत, वेदव्यास / सातवलेकर दामोदर, स्वाध्याय भवन, पराडी महाराष्ट्र, 1969 सन्।
7. अमरकोष, डॉ रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी, 2013 सन्।
8. अष्टाध्यायी, पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपूर ट्रस्ट, हरियाणा, 2009 सन्।
9. विष्णुपुराण, श्रीमुनिलाल गुप्त, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2017 सन्।